मागधी भाषा का स्रोत प्राकृत भाषा

लेखक - डॉ० सुदर्शन मिश्र

प्रस्तुत शीर्षक पर विचार करते ही आठवीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् वाक्पतिराज के 'गउडवहो' नामक प्राकृत महाकाव्य की 93वीं गाथा[1] में कही गई बात स्मरण हो आती है। इस गाथा में उन्होंने प्राकृत भाषा को सभी भाषाओं का स्रोत मानते हुए कहा है कि "जिस प्रकार जल समुद्र में प्रवेश करता है और समुद्र से ही वाष्प रूप में बाहर निकलता है, इसीतरह प्राकृत भाषा में सब भाषाएँ प्रवेश करती हैं और फिर इसी प्राकृत भाषा से ही सभी भाषाएँ निकलती हैं।" मागधी भाषा की उत्पत्ति और विकास पर दृष्टिपात करने पर वाक्पतिराज का उपर्युक्त कथन शत-प्रतिशत सही प्रतीत है। परन्तु प्राकृत भाषा से उनका तात्पर्य व्याकरण और साहित्य निबद्ध वर्तमान प्राकृत भाषा से नहीं है, बल्कि भाषा के रूप में 'प्राकृत' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख करने वाले भरत मुनि कृत नाट्यशास्त्र में वर्णित प्राकृत भाषा से है, जिसमें संस्कृत से प्राकृत भाषा को अलग करते हुए कथन है कि 'यह प्राकृत भाषा संस्कृत के प्रतिकूल तथा संस्कार गुण से रहित और विभिन्न दशाओं के अन्तर को धारण करती है तथा देश, जाति और अवस्था के अनुरूप उसके विभिन्न रूप हो जाते हैं।'[2] इस वर्णित परिभाषा के

---

1. सयलाओ इमं वाया विसंति एत्तो य णेंति वायाओ।
एंति समुद्दं चिय णेंति सायराओ चिय जलाइं ॥93॥

2. एतदेव विपर्यस्तं संस्कारगुणवर्जितम्।
विज्ञेयं प्राकृतं पाठ्यं नानावस्थान्तरात्मकम्॥ - नाट्यशास्त्र में प्राकृत-संदर्भ-1.2,

लेखक डॉ० सुदर्शन मिश्र, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जयपुर. 2013 ई०।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

आलोक में निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए हमें मागधी भाषा के देश, जाति और अवस्था के उपलब्ध आदिम स्वरूप को जानना आवश्यक है।

सर्वप्रथम हम मागधी भाषा के देश पर विचार करते हैं, तो प्राकृत भाषा के प्रसिद्ध वैयाकरण वररुचि के अनुसार यह भाषा मगध देश की व्यवहार में बोली जाने वाली भाषा है।[3] षड्भाषाचन्द्रिका के कर्ता के अनुसार भी मगध देश में उत्पन्न भाषा को मागधी कहते हैं।[4]

मागधी भाषा की प्राचीनता — प्रदेश के रूप में मगध का सर्वप्राचीन स्पष्ट उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है।[5] वैसे ऋग्वेद (3.55.14) में कीकट का जो उल्लेख है, वह भी मगध के लिए ही माना जाता है, क्योंकि निरुक्त (6.32) में यह शब्द मगध के लिए प्रयुक्त हुआ है। शब्दकोशों में भी कीकट का अर्थ मगध और अनार्य दोनों मिलता है। इन उल्लेखों से मागधी की प्राचीनता वेदकालीन सिद्ध होती है।

मगध की जाति :→ अथर्ववेद में मगध को व्रात्यों का मित्र, मंत्री तथा उसका वस्त्र बताया गया है —

.... प्रियं धाम भवति तस्य प्राच्यं दिशि
श्रद्धा पुंश्चली मित्रो मागधो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषम् ॥15.24.5॥

व्रात्यों की विशेषताओं का विवरण प्रस्तुत करते हुए पंचविंश ब्राह्मण (17.04.1.9) में उन्हें वेदों का अध्ययन नहीं करने वाले और वैदिक साहित्य में प्रतिपादित यम-नियमों का विरोधी बताया गया है। व्रात्यों को शुद्ध उच्चारण नहीं करने और वेदेतर भाषा बोलने

3. मगधानां भाषा मागधी – प्राकृत प्रकाश:, 11.1 की वृत्ति।
4. मगधोत्पन्नभाषां तां मागधीं संप्रचक्षते – षड्भाषाचन्द्रिका, पृ० 2।
5. अथर्ववेद – 5.22.14 भाष्यकार, सातवलेकर, स्वाध्याय मंडल, पारडी, 1985 ई०

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

भाला भी कहा गया है। यह वैदेतर भाषा मगध की भाषायी ही रही होगी, जिसके सम्बन्ध में गरुड़पुराण में कहा है —

लोकायतं कुतर्कं च प्राकृतं म्लेच्छभाषितम्।
न श्रोतव्यं द्विजेनैतत् अधो नयति तद्द्विजम्॥

= पूर्व खण्ड, 98.17.

अर्थात् लोकायत, कुतर्क तथा म्लेच्छों द्वारा बोली जाने वाली प्राकृत किसी ब्राह्मण को सुनने योग्य नहीं, ये उसे अधोगति को ले जाते हैं।

ब्रात्य अन्य भागों में भी रहे होंगे, परन्तु ब्रात्यों की पुण्यभूमि मगध को ही कहा गया है। इसका तात्पर्य यही है कि ब्रात्यों की साधना भूमि मगध प्रदेश ही थी। वैदिक याग-यज्ञों को अमान्य कर व्रत और तपस्या पर जोर देने वाले ब्रात्यों का पीठ-स्थान मगध था। यजुर्वेद (30.22) में पुरुषमेध के अवसर पर मगध की बलि अतिक्रुष्ट के लिए बतायी गयी है। लाट्यायन श्रौत सूत्र (8.6.28) और कात्यायन श्रौतसूत्र (22.4.22) में उल्लिखित है कि ब्रात्य धन या तो पतित ब्राह्मण को दिया जाय या मगध के ब्राह्मण को दिया जाय। शतपथ ब्राह्मण (14.4, 1.10) के अनुसार प्राचीन काल में मगध ब्राह्मण धर्म में दीक्षित नहीं थे। यहाँ निर्ग्रन्थ, सांख्य, भागवत और पति धर्म जोरों पर था। ये सभी वेदों को प्रमाण न मानने वाले धर्म थे।[6]

जैन विद्वानों के अनुसार मगध महाजनपद एवं उससे सम्बद्ध क्षेत्रों में पार्श्वनाथ के अनुयायियों की संख्या विशाल थी। आचारांग (2.15.16) के अनुसार महावीर के पिता स्वयं पार्श्वनाथ के धर्म के अनुयायी थे। ऋषभ और नेमिनाथ को छोड़कर शेष बाईस तीर्थंकरों को मगध में ही निर्वाण प्राप्त हुआ था।[7] जैन अनुश्रुतियों के अनुसार चन्द्रगुप्त जैन था। चन्द्रगुप्त के साम्राज्य में जैन साधुओं का वर्णन न केवल भारतीयों, वरन् यूनानी इतिहासकारों द्वारा भी

6. मगध (इतिहास और संस्कृति) – बैजनाथ सिंह, श्री जैन संस्कृति संशोधन मंडल, बनारस-5, 1954 ई०, पृ० 4।
7. जैनधर्म का इतिहास, भाग 3 – ले०, कैलाशचन्द्र जैन, प्र० – डी० के प्रिंटवर्ल्ड (प्रा०) लि० काली नगर, नई दिल्ली – 2005 ई०, पृ० 802.

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

बार-बार किया गया है।[8]

उपर्युक्त तथ्यों से प्रमाणित होता है कि वैदिक काल में मगध के निवासी सभ्यता तथा धर्म की दृष्टि से नितान्त हेय और हीन समझे जाते थे। उन पर श्रमण विचार धारा का प्रचुर प्रभाव था। मगध के ब्राह्मण भी वेद और वेदानुमोदित याग-यज्ञ आसानी से छोड़ देते थे। महावीर के सभी गणधर मगध अथवा उसके पासवर्ती प्रदेशों के प्रसिद्ध ब्राह्मण विद्वान् थे[9] और बौद्ध धर्म के दीक्षित 264 थेरों में 116 थेर ब्राह्मण कुलोत्पन्न थे।[10] वेद काल में भी मगध की यही स्थिति अनुमानित की जा सकती है।

वैदिक उल्लेखों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि उस काल में आर्यों के धार्मिक विचारों में मतभेद थे और वे वैचारिक दृष्टि से मुख्यतः वैदिक और श्रमण के रूप में विभाजित हो चुके थे। विचारों की विभिन्नता नये-नये शब्दों के जन्म भी दिये होंगे। वेदों का निर्माण जिस भाषा में हुआ उसे छान्दस रूप में आज हम जानते हैं। छान्दस भाषा का विकास उस समय की परिनिष्ठित जनबोली से ही हुयी होगी, क्योंकि वेदों की अलग-अलग भाषा में विद्वानों ने जनबोलियों के तत्वों को, खोज निकाला है। इन तत्वों में मागधी जनबोली का कितना योगदान है, यह यहाँ विचारणीय है।

परवर्ती वैदिककाल में देश्य भाषा के विकास को पूर्व विद्वानों ने तीन वर्गों में विभाजित किया है – (क) उदीच्या (उत्तरीय) (ख) मध्यदेशीय और (ग) प्राच्या (पूर्वीय)। प्राच्या भाषा ही मागधी कहलाती थी। शतपथ ब्राह्मण में उल्लिखित है कि पूर्वी देशों के लोग संस्कृत शब्दों का सही-सही उच्चारण नहीं कर सकते और वे र

8. वही, भाग-2, पृ. 389.
9. आवश्यक निर्युक्ति (खण्ड-1). 415-429, सम्पादिका-डॉ० समणी कुसुमप्रज्ञा, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनू-2001 ई०।
10. बौद्ध धर्म के विकास में ब्राह्मणों का योगदान, ले०-डॉ० विश्वजीत कुमार, इम्प्रेसन पब्लिकेशन, पटना-2006 ई०, पृ० 86.

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

को ल बोलते हैं।" सर्वप्राचीन उपलब्ध प्राकृत वैयाकरण चण्ड कृत 'प्राकृत लक्षणम्' में र के स्थान पर ल और ष, स के स्थान पर 'श' प्रयुक्त होने वाली भाषा को मागधिका कहा गया है।[12] जहाँ तक मुझे स्मरण है ऋग्वेद के किसी संस्करण की भूमिका में पढ़ा है कि उसके दसवें मंडल में रघु के स्थान पर लघु लिखा मिलता है। यदि यह तथ्य सही हो तो असम्भव नहीं कि वेदों में पाये जाने वाले प्राकृत के सभी तत्व वेदकालीन मागधी भाषा के ही रहे हों। प्राकृत व्याकरण ग्रन्थों में जो शूरसेन प्रदेश की शौरसेनी को मागधी की प्रकृति बतायी गई है, महाभारत काल से पूर्व तो उसका अस्तित्व ही नहीं था। ऋग्वेद का 'शमी' शब्द जो रथ में घोड़ों को जोतने वाले काँटे के अर्थ में है, वह आधुनिक मागधी (मगही) में समैला के रूप में पाया जाता है। इसी प्रकार तुमुन्नार्थक वैदिक 'तवे' प्रत्यय संस्कृत में बिल्कुल नहीं, किन्तु ~~अशो~~ मागधी भाषा के अभिलेखों में पाया जाता है।[13] वेद में प्रयुक्त प्राकृत के कह, पत्थ और पुरोडाश जैसे शब्द मागधी भाषा में भी पाये जाते हैं।

वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक मागधी भाषा के निम्नलिखित पाँच स्वरूप प्राप्त होते हैं :→

1. वेदकालीन मागधी
2. मौर्यकालीन मागधी
3. ~~प्राकृत~~ मध्यकालीन अथवा देशी मागधी
4. अपभ्रंश कालीन मागधी
5. मगही के रूप में आधुनिक मागधी।

वेदकालीन मागधी भाषा के संकेत मात्र उपलब्ध होते हैं। शेष का विवा

11. संस्कृति के चार अध्याय, प्र० - उदयाचल, राष्ट्रकवि दिनकर पथ, राजेन्द्र नगर, पटना, 1980 ई०, पृ० 144. केदारनाथ सिंह
12. मागधिकायां र - सयोर्ल - शौ - 1/3.41 - सम्पादक - मुनिराज श्री दर्शनविजयजी, प्र० - शाह मफतलाल माणेकचन्द, श्री चारित्र स्मारक ग्रन्थमाला, वीरमगाम (गुजरात) वि.सं. 1992.
13. ऋग्वेद संहिता, प्र० - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-1, 1973 ई०, स० - उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'), भूमिका - पृ० 13.

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

संक्षेप में निम्नवत प्रस्तुत है।

<u>मौर्यकालीन मागधी</u> : → मौर्यकाल से पूर्व ही मागधी भाषा के राष्ट्रीय स्वरूप के संकेत मिलते हैं। महावीर-बुद्ध के युग में उसे श्वेताम्बर जैनागम के अनुसार अर्धमागधी कहते थे और बौद्धानुयायियों के अनुसार मागधी। नवांगी टीकाकार आचार्य अभयदेवसूरि ने औपपातिक सूत्र में जहाँ भगवान महावीर की देशना के वर्णन के प्रसंग में अर्धमागधी भाषा का उल्लेख हुआ है, वहाँ अर्धमागधी को ऐसी भाषा के रूप में व्याख्यात किया है, जिसमें मागधी में प्रयुक्त होने वाले ल और श का कहीं-कहीं प्रयोग तथा प्राकृत का अधिकांश प्रयोग था।[14] दिगम्बर जैनागम धवला के टीकाकार ने तीर्थंकर की उपदेश-वाणी को सर्वभाषामय, शान्त एवं अनुपम बताया है।[15] इसी प्रकार दिगम्बर जैनग्रन्थ दर्शन पाहुड में वर्णित है कि तीर्थंकर की दिव्यध्वनि आधी मगध देश की भाषा रूप और आधी सर्व भाषा रूप होती है।[16]

महावीर के समय में ही बुद्ध के भी धर्मोपदेश हुए थे, जिनकी भाषा मागधी बतायी जाती है। इसीलिए सिंहली परम्परा पालि को मागधी ही मानती है। मोग्गलायन (बारहवीं शताब्दी) ने अपना पालि व्याकरण लिखते हुए उसके प्रारम्भ में कहा है- 'भासिस्सं मागधं सद्दलक्खणं' अर्थात् मैं मगध शब्द-लक्षण (मागधी व्याकरण) को कहूंगा। वाचिस्सर थेर ने भी 'थूपवंश' में अपने समय में विद्यमान और पालि भाषा में लिखे गये एक अन्य पूर्ववर्ती 'थूपवंश' का उल्लेख करते हुए उसे मागधी भाषा में ही लिखा गया बतलाया है — 'मागधनिरुत्तिकतो पि थूपवंसो'। इस प्रकार यहाँ पालि भाषा के

14. अद्धमागहाए भासाए ति रसोर्लशौ मागध्यामित्यादिकम् मागधभाषालक्षणं परिपूर्ण नास्ति। एवं उववाइयसुत्तं सटीकं, पृ० 224-25।
15. षट्खण्डागम - धवला टीका 1.46 (पीठिका)।
16 जैन सिद्धान्त कोश, भाग-2, पृ० 432.

लिए 'मगधनिरुक्ति' शब्द का प्रयोग हुआ है।[17] जेम्स एल्विस, चाइल्डर्स, विण्डिश, विण्टरनित्ज, ग्रियर्सन और गायगर ने भी पालि-भाषा के मागधी आधार को स्वीकार किया है।[18] भिक्षु सिद्धार्थ और भिक्षु जगदीश काश्यप के भी ऐसे ही मत हैं।[19]

जैनेतर विद्वान् वाग्भट (तेरहवीं सदी का पूर्वार्द्ध) कृत काव्यानुशासन (1.1) के अनुसार अर्धमागधी सबकी है, सब भाषाओं में अपना परिणाम दिखाती है, सब प्रकार से पूर्ण है और इसके द्वारा सब कुछ जाना जा सकता है —

सर्वार्धमागधीम् सर्वभाषासु परिणामिनीम्।
सर्वेषां सर्वतोवाचम् सार्वज्ञीम् प्रणिदध्महे॥

उपर्युक्त विवरणों से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मौर्य-काल से पूर्व ही, महावीर-बुद्ध काल में ही मागधी एक राष्ट्रीय भाषा के रूप में, मगध के वाक्-व्यवहार में आ चुकी थी जो सभी के लिए सरल एवं सुबोध थी।

मागधी के सर्वप्राचीन उपलब्ध अभिलेख सासाराम (बिहार), अहरौरा (उ.प्र.), बैराट (राजस्थान) और बहापुर (दिल्ली) की पहाड़ियों अथवा शिलाखण्डों पर अलग-अलग ब्राह्मीलिपि में उत्कीर्ण अभिलेख हैं। ये अभिलेख मागधी प्राकृत के ही नहीं; बल्कि सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मय के सर्वप्राचीन उपलब्ध अभिलेख हैं। इन्हें मगध सम्राट् अशोक ने अपने राज्याभिषेक से ग्यारह वर्षों बाद उत्कीर्ण करवाया था। भारतीय वाङ्मय में इन्हें लघुशिलालेखों के रूप में जाना जाता है। जोगीमारा-रामगढ़ के अभिलेख को भी अशोक के लगभग समकालीन ही माना जाता है। यह अत्यन्त छोटा होते हुए भी मागधी भाषा के समस्त कलेवर को अपने में समेटे हुए है। अभिलेख निम्नवत है —

शुतनुक नाम देवदशिक्यि, तं कामयिथ बलनशेये,
देवदिने नम लुपदखे।[20]

17. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृ. 28 - डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी - 1988 ई.।
18. पालि साहित्य का इतिहास - भरतसिंह उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2000 ई. पृ. 13.
19. वही, पृ. 20.
20. (क) प्राकृत भाषा - डॉ. प्रबोध बेचरदास पंडित, श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम, बनारस, 1954 ई., पृ. - 34.
(ख) प्राकृत-अपभ्रंश-भाषा एवं साहित्य, ले. - एल. बी. राम 'अनन्त', पृ. - साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ, 1974 ई., पृ. - 10.

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

अशोक के विशाल साम्राज्य की फैली हुई सीमाओं पर उत्कीर्ण शिलालेखों को भारत का प्रथम लिंग्वीस्टीक सर्वे का नाम मिला है।[21] मगध की भाषा कैसी थी? इसका समाधान मगध की हृदय स्थली गया की पहाड़ियों पर स्थित गुफालेखों, उसके समीपवर्ती सासाराम और अहरौरा के लघु शिलालेखों तथा बिहार के चम्पारण जिले में उपलब्ध लौरिया-नन्दनगढ़ एवं रामपुरवा स्तम्भ लेखों से होता है। ये सभी स्थान मगध अथवा उसके निकट अवस्थित हैं। यहाँ के अभिलेख भी अन्य अभिलेखों की तरह यहाँ की ही बोलियों में लिखे गये हैं। अतएव, इन्हें प्राचीन मागधी मानने में कोई आपत्ति नहीं होती।

उपर्युक्त स्थानीय अभिलेखों की भाषिक प्रवृत्तियों का परवर्ती वैयाकरणों द्वारा प्रतिपादित मध्यकालीन मागधी की प्रवृत्तियों से मिलान करने पर निम्नलिखित समानताएँ दृष्टिगोचर होती हैं —

1. रकार के स्थान पर लकार का प्रयोग।[22]

यथा -

संस्कृत	मागधी	सन्दर्भ
राजा	लाजा	स्तम्भलेख (1.1, 6.1) आदि।
पुरुषः	पुलिसे	स्तम्भलेख (1.7) आदि।
वारिचरेषु	वालिचलेसु	स्तम्भलेख (2.4) आदि।

2. उ-कार के स्थान पर इ-कार का प्रयोग।[23]

यथा -

संस्कृत	मागधी	सन्दर्भ
पुरुषः	पुलिसे	धौली शिलालेख (1.7.8)।

3. कर्ता एकवचन में अर्थात् विसर्ग के स्थान पर ए-कार का प्रयोग।[24]

यथा -

संस्कृत	मागधी	सन्दर्भ
धर्मः	धंमे	स्तम्भलेख (2.2)।
कृतः	कटे	स्तम्भलेख (2.4)।
पुरुषः	पुलिसे	धौली शिलालेख (1.7.8) आदि।

---

21. प्राकृत भाषा, पृ. 21.
22. र-सोर्ल-शौ — सिद्धहैमशब्दानुशासनम् 8.4.288.
23. वही 8.4.287 का उदाहरण।
24. अत एतौ पुंसि मागध्याम् - वही, 8.4.287.

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

4. अस्मद् शब्द के प्रथमा एक वचन सु विभक्ति में अहम् के स्थान पर हकँ या अहकँ शब्द का प्रयोग।[25]

यथा - संस्कृत मागधी सन्दर्भ

अहम् हकँ, अहकँ धौली (6.2.5), जौगढ़ (6.5.2) आदि।

वैयाकरणों ने मागधी की एक अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषता ष और स के स्थान पर श का होना बताया है[26], जो एक मात्र अभिलेख जोगीमारा-रामगढ़ को छोड़कर अन्य किसी में उपलब्ध नहीं है। इस सन्दर्भ में डॉ॰ चटर्जी का यह कथन उल्लेखनीय है कि श कार को ग्राम्य गिना जाता होगा, अतः इसे राजभाषा (मागधी) में प्रवेश नहीं मिल सका है और स कार शिष्टता की वजह से प्रयुक्त हुआ प्रतीत होता है।[27] शकार की ग्राम्यता के दूसरे आधार भी मिलते हैं। नाटकों की प्राकृतों में नीच पात्र मागधी का व्यवहार करते हैं, जहाँ स और ष का श होना उनकी मागधी की खास विशिष्टता है। ज्ञातव्य है कि मगध क्षेत्र में अवस्थित अशोक के पौत्र दशरथ के गुफालेख में मात्र 'ष' का तथा जोगीमारा-रामगढ़ के शिलालेख में मात्र 'श' का प्रयोग है। इससे ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में मागधी जनपद के लोग इन तीनों - श, ष और स में भेद नहीं कर पाते थे और तीनों में से किसी एक का व्यवहार करते थे। भास के नाटकों में भी एक मात्र शकार की मागधी में 'श'[28] का और गोपालकों की मागधी में 'ष'[29] का प्रयोग हुआ है।

ऊपर वर्णित विशेषताएँ एक मात्र मागधी में ही पायी जाती हैं तथा मगध और उसके निकटवर्ती प्रदेशों में उपलब्ध अशोक के सभी अभिलेखों की भाषा इन लक्षणों से युक्त हैं, अतः इसे मागधी मानने में न तो कोई अवरोध दिखायी पड़ता है और नहीं कोई अन्य विकल्प। मगध में उपलब्ध अभिलेखों की भाषा में अन्य जो भी अभिलेख उत्कीर्ण हैं, वे सब के सब प्राचीन मागधी भाषा के ही माने जाने चाहिए।

8.4.30

25. अहम् - ~~वयमोर्~~ वयमोर्हगे - मागध्यामहंवयमो: स्थाने हगे इत्यादेशो भवति, - ~~हे~~ 8.4.301

26. मागधिकायां र - सयोर्ल - शौ - प्राकृत लक्षणम्, चण्ड - 1.3.41.

27. प्राकृत भाषा, पृ॰ 34.

28. चारुदत्तम्।

29. पंचरात्रम् - भास, द्वितीय अंक से पूर्व और बालचरितम् - भास, तृतीय अंक का प्रारम्भ।

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

महावीर - बुद्ध काल से लेकर मौर्यकाल तक मागधी का जो राष्ट्रिय स्वरूप दृष्टिगोचर होता है, वह मौर्यकाल के तुरन्त बाद उत्कीर्ण शिलालेखों के शिलालेख में दृष्टिगोचर नहीं होता। इससे ज्ञात होता है कि मौर्य काल के बाद मागधी का जो राष्ट्रिय स्वरूप था, वह बदल चुका था। उसके बदले हुए स्वरूप में मागधी भाषा विलुप्त हो चुकी थी और यही भाषा आगे चलकर प्राकृत अर्थात् महाराष्ट्री के नाम से प्रतिष्ठित हुई। मध्यकाल प्राकृत की जितनी विभाषाओं के विवरण प्राप्त होते हैं, वे सब के सब मागधी भाषा के ही तिङ् होते हैं, जो उसके पूर्वकालिक राष्ट्रिय स्वरूप के द्योतक हैं। इस प्रकार प्राकृत रूप जनभाषा से विकसित मागधी प्रथम प्राकृत भाषा सिद्ध होती है, जिसका अवसान प्राकृत भाषा के रूप में हुई। इसीलिए बौद्ध साहित्य में इसे सम्पूर्ण प्राणियों की आदि भाषा स्वीकार किया गया है।

आचार्य बुद्धघोष ने विसुद्धिमग्ग (चौदहवें परिच्छेद) में कहा है— मागधिकाय सब्बसत्तानं मूलभासाय' अर्थात् सम्पूर्ण प्राणियों की मूल भाषा मागधी है। इसी प्रकार महावंश के परिवर्धित अंश चूलवंश के परिच्छेद 37 की 244 वीं गाथा में कहा गया है - 'सब्बे सं मूलभासाय मागधाय निरुत्तिया (सम्पूर्ण प्राणियों की मूल भाषा मागधी भाषा है) आदि।[30] इसी अर्थ को व्यक्त करते हुए कच्चायण व्याकरण की भूमिका में उल्लेखित है[31] -

सा मागधी मूलभासा नरा यायादिकप्पिका।
ब्रह्मानो चस्सुतालापा सम्बुद्धा चापि भासरे॥

अर्थात् मागधी ही वह मूल भाषा है, जिसमें प्रथम कल्प के मनुष्य बोलते थे, वही ब्रह्माओं तथा अज्ञात वचन वाले शिशुओं की भी मूलभाषा है और बुद्धों ने भी इसी में व्याख्यान दिया है।

---

30. उपर्युक्त पालि साहित्य का इतिहास, पृ. 13
31. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृ. 28 - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी - 1998 ई.)

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner